(गिनती 25:7)

बाइबल में “भाला” शब्द मुख्य रूप से दो प्रकार के हथियारों के लिए प्रयोग होता है—
छेदने वाला भाला और फेंकने वाला भाला (बरछा / जैवेलिन)।

1. छेदने वाला भाला

यह एक लंबा और भारी हथियार होता है, जिसके सिरे पर नुकीला फल लगा होता है। इसका उपयोग आमने-सामने की लड़ाई में शत्रु को भेदने के लिए किया जाता था।

गिनती 25:7 में लिखा है:

“एलियाजार के पुत्र पीनहास ने… अपने हाथ में भाला लिया…”

यह भाला सीधे सामना करने, निर्णायक कार्यवाही और पाप के विरुद्ध कठोर रुख का प्रतीक है।

2. फेंकने वाला भाला (बरछा / जैवेलिन)

यह अपेक्षाकृत हल्का हथियार होता है, जिसे दूर से शत्रु पर

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□

1 □□□□□ 17:45 □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□:

> “□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□…”

□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□, □□□□□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□

□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□-□□□ □□-□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□—
□ □□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□

- 1 □□□□□ 17:45 — □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□:

  > “□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□”

अय्यूब 41:26 —

“तलवार भी उस पर प्रभाव नहीं डालती, न भाला, न बरछा, न तीर।”

अन्य पद जहाँ छेदने वाले भाले का उल्लेख है:

गिनती 25:7–8 — पीनहास अपने भाले से इस्राएलियों के बीच फैली महामारी को रोकता है, जब वह पाप में पकड़े गए एक इस्राएली पुरुष और एक मिद्यानिनी स्त्री को मार देता है।
1 शमूएल 17:7 — गोलियत के भाले का वर्णन बहुत बड़ा और भारी बताया गया है।
1 शमूएल 26:12 — दाऊद राजा शाऊल का भाला उठा लेता है जब वह सो रहा होता है; यह परमेश्वर की रक्षा और दाऊद के संयम को दर्शाता है।

मसीही जीवन में आत्मिक हथियार

बाइबल में भाले जैसे भौतिक हथियारों का उपयोग कई बार आत्मिक अधिकार और सामर्थ्य के प्रतीक के रूप में किया गया है। नए नियम में विश्वासियों को “परमेश्वर के सारे हथियार” पहनने के लिए बुलाया गया है।

इफिसियों 6:10–18 हमें सिखाता है कि हमारा युद्ध शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक है।

2 कुरिन्थियों 6:7 —
पौलुस “धार्मिकता के हथियारों” की बात करता है, जो दाहिने और बाएँ हाथ में हैं—अर्थात सत्य, विश्वास, धार्मिकता और प्रार्थना।
लूका 10:19 — यीशु कहते हैं:

“देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को कुचलने और शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार दिया है; और तुम्हें कुछ भी हानि न पहुँचेगी।”

यह आत्मिक अधिकार शारीरिक बल से नहीं, बल्कि यीशु के नाम और उसके लहू के द्वारा मिलता है
(प्रेरितों 1:8; प्रकाशितवाक्य 12:11)।

इसी सामर्थ्य से मसीही:

दृढ़ता से खड़े रहते हैं,
शैतान का विरोध करते हैं,
और उसके कामों को नष्ट करते हैं
(याकूब 4:7)।

निष्कर्ष

जैसे प्राचीन समय में सैनिक युद्ध में भाले और बरछे उठाए रहते थे, वैसे ही आज मसीहियों को भी आत्मिक हथियार उठाने हैं— विश्वास, परमेश्वर का वचन, प्रार्थना और यीशु द्वारा दिया गया अधिकार।

इन हथियारों के द्वारा हम:

आत्मिक आक्रमणों के विरुद्ध स्थिर खड़े रहते हैं,
निडर होकर सुसमाचार का प्रचार करते हैं,
पाप और दुष्टात्मिक बंधनों को तोड़ते हैं,
और प्रार्थना के द्वारा स्वयं तथा दूसरों की रक्षा करते हैं।

याद रखें—ये आत्मिक हथियार परमेश्वर के अनुग्रह से आपके हाथों में दिए गए हैं।
उन्हें विश्वास और भरोसे के साथ प्रयोग करें।

प्रभु आपको आशीष दे और सामर्थ्य से भर दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp